CAREERS360
PREPARATION Series

CGBSE Class 12

Political Science Syllabus

पाठ्यक्रम संरचना
सत्र 2023–24
कक्षा – XII
विषय – राजनीति विज्ञान (103)

पूर्णांक– 100

सैद्धांतिक – 80
प्रायोजना – 20

क्र.	इकाई एवं पाठ्यवस्तु	आबंटित अंक	कालखण्ड
	(A) समकालीन विश्व राजनीति	40	110
1.	1. शीतयुद्ध का दौर	08	14
2.	2. दो ध्रुवीयता का अंत		13
3.	3. समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व	14	13
4.	4. सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र		11
5.	5. समकालीन दक्षिण एशिया		13
6.	6. अंतर्राष्ट्रीय संगठन	09	13
7.	7. समकालीन विश्व में सुरक्षा		11
8.	8. पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन	09	11
9.	9. वैश्वीकरण		11
	(B) स्वतंत्र भारत में राजनीति	40	110
10.	10. राष्ट्र निर्माण की चुनौतियां	14	13
11.	11. एक दल के प्रभुत्व का दौर		12
12.	12. नियोजित विकास की राजनीति		11
13.	13. भारत के विदेश संबंध	06	13
14.	14. कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ एवं पुर्नस्थापना	08	13
15.	15. लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट		13
16.	16. जन आंदोलनों का उदय	12	11
17.	17. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ		11
18.	18. भारतीय राजनीति : नए बदलाव		13
	योग	80	220
	प्रोजेक्ट कार्य	20	20
	महायोग	100	240

टीप (i) पाठ्यक्रम पूर्ववत् यथावत्

(ii) अंकविभाजन संशोधित

CAREERS 360

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर

पाठ्यक्रम (2019–20)
कक्षा 12वी
विषय – राजनीति विज्ञान (103)

पूर्णांक 100 अंक

सैध्दांतिक 80 अंक
प्रायोगिक 20 अंक

इकाई	विषयवस्तु	आबंटित अंक	निर्धारित कालखण्ड

भाग–I समकालीन विश्व राजनीति –(40 अंक)

इकाई 1

अध्याय 1. शीतयुद्ध का दौर 14

परिचय, क्यूबा का मिसाइल संकट, शीतयुद्ध क्या है?, दो ध्रुवीय विश्व का आरंभ, शीतयुद्ध के दायरे, दो ध्रुवीयता को चुनौती– गुटनिरपेक्षता, नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, भारत और शीतयुद्ध।

अध्याय 2. दो ध्रुवीयता का अंत 13

परिचय, सोवियत प्रणाली क्या थी? गोर्बाचेव और सोवियत संघ का विघटन, सोवियत संघ का विघटन क्यों हुआ? विघटन की परिणतियाँ, साम्यवादी शासन के बाद 'शॉक थेरेपी', 'शॉक थेरेपी' के परिणाम, संघर्ष और तनाव, पूर्व साम्यवादी देश और भारत।

इकाई 2

अध्याय 3. समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व 13

परिचय, आयशा, जाबू और आंद्रेई, नयी विश्व– व्यवस्था की शुरूआत, क्लिंटन का दौर, 9/11 और 'आंतकवाद के विरूद्ध विश्वव्यापी– व्यापी युद्ध', इराक पर आक्रमण, क्या होता है, वर्चस्व का अर्थ ? वर्चस्व– सैन्य शक्ति के अर्थ में, वर्चस्व– ढाँचागत ताकत के अर्थ में, वर्चस्व – सांस्कृतिक अर्थ में, अमरीकी शक्ति के रास्ते में अवरोध, अमरीका से भारत के संबंध, वर्चस्व से कैसे निपटें ?

अध्याय 4. सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र 11

परिचय, यूरोपीय संघ, दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान), चीनी अर्थव्यवस्था का उत्थान, चीन के साथ भारत के संबंध, जापान, दक्षिण कोरिया।

अध्याय 5. समकालीन दक्षिण एशिया 13

परिचय, क्या है दक्षिण एशिया? पाकिस्तान में सेना और लोकतंत्र, बांग्लादेश में लोकतंत्र, नेपाल मे राजतंत्र और लोकतंत्र, श्रीलंका में जातीय संघर्ष और लोकतंत्र, भारत– पाकिस्तान संघर्ष, भारत और उसके अन्य पड़ोसी देश, शांति और सहयोग

इकाई 3

अध्याय 6. अंतर्राष्ट्रीय संगठन 13

परिचय, हमें अंतर्राष्ट्रीय संगठन क्यों चाहिये? संयुक्त राष्ट्रसंघ का विकास, शीतयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार, प्रक्रियाओं और ढाँचे में सुधार, संयुक्त राष्ट्रसंघ का न्यायाधिकार, संयुक्त राष्ट्रसंघ में सुधार और भारत, एक–ध्रुवीय विश्व में संयुक्त राष्ट्रसंघ।

अध्याय 7. समकालीन विश्व में सुरक्षा 11

परिचय, सुरक्षा क्या है?, पारंपरिक धारणा–बाहरी सुरक्षा, पारंपरिक धारणा–आंतरिक सुरक्षा, सुरक्षा के पारंपरिक तरीके, सुरक्षा की अपारंपरिक धारणा, खतरे के नये स्त्रोत, मानवाधिकार, सहयोगमूलक सुरक्षा, भारत–सुरक्षा की रणनीतियाँ।

इकाई	विषयवस्तु	आबंटित अंक	निर्धारित कालखण्ड

इकाई 4

अध्याय 8. पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन 11

परिचय, वैश्विक राजनीति मे पर्यावरण की चिंता क्यों? विश्व की साझी संपदा की सुरक्षा, साझी परंतु अलग–अलग जिम्मेदारियाँ, साझी संपदा, पर्यावरण के मसले पर भारत का पक्ष, पर्यावरण आंदोलन–एक या अनेक, संसाधनों की भू– राजनीति, मूलवासी (Indigenous People) और उनके अधिकार।

अध्याय 9. वैश्वीकरण 11

परिचय, वैश्वीकरण की अवधारणा, वैश्वीकरण के कारण, राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, भारत और वैश्वीकरण, वैश्वीकरण का प्रतिरोध, भारत और वैश्वीकरण का प्रतिरोध।

भाग–II स्वतंत्र भारत में राजनीति – (40 अंक)

इकाई 5

अध्याय 10. राष्ट्र– निमार्ण की चुनौतियाँ – 13

नए राष्ट्र की चुनौतियाँ, विभाजन : विस्थापन और पुनर्वास, विभाजन की प्रक्रिया, विभाजन के परिणाम, रजवाड़ों का विलय– समस्या, सरकार का नजरिया, हैदराबाद, मणिपुर, राज्यों का पुनर्गठन

अध्याय 11. एक दल के प्रभुत्व का दौर 12

लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती, पहलें तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व, सोशलिस्ट पार्टी, कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया, गुटों में तालमेल और सहनशीलता, भारतीय जनसंघ, विपक्षी पार्टियों का उद्भव, स्वतंत्र पार्टी।

अध्याय 12. नियोजित विकास की राजनीति 11

राजनीतिक फैसले और विकास, राजनीतिक टकराव, विकास की धारणाएँ, योजना आयोग, शुरुआती कदम– प्रथम पंचवर्षीय योजना, आद्योगीकरण की तेज रफ्तार, मुख्य विवाद– कृषि बनाम उद्योग, निजी क्षेत्र बनाम सार्वजनिक क्षेत्र, मुख्य परिणाम– बुनियाद, भूमि सुधार, खाद्य संकट, हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, बाद के बदलाव।

इकाई 6

अध्याय 13. भारत के विदेश संबंध 13

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ, गुटनिरपेक्षता की नीति– नेहरू की भूमिका, दो खेमों से दूरी, एफ्रो एशियाई एकता, चीन के साथ शांति और संघर्ष– चीन का आक्रमण, 1962, तिब्बत, पाकिस्तान के साथ युद्ध और शांति, बांग्लादेश युद्ध,1971, भारत की परमाणु नीति।

इकाई 7

अध्याय 14. कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना 13

राजनीतिक उत्तराधिकार की चुनौती– नेहरू के बाद शास्त्री, शास्त्री के बाद इंदिरा गाँधी, चौथा आम चुनाव, 1967–चुनावों का संदर्भ, गैर–कांग्रेसवाद, चुनाव का जनादेश, गठबंधन, दल–बदल, कांग्रेस में विभाजन, इंदिरा बनाम सिंडिकेट, राष्ट्रपति पद का चुनाव, 1969, 1971 का चुनाव और कांग्रेस का पुनर्स्थापन– मुकाबला, परिणाम और उसके बाद ..... कांग्रेस प्रणाली का पुनर्स्थापन

अध्याय 15. लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट 13

आपातकाल की पृष्ठभूमि– आर्थिक संदर्भ, गुजरात और बिहार के आंदोलन, नक्सलवादी आंदोलन, न्यायपालिका से संघर्ष, आपातकाल की घोषणा, संकट और सरकार का फैसला, परिणाम, आपातकाल के संदर्भ में विवाद, क्या 'आपातकाल' जरूरी था? आपातकाल के दौरान क्या–क्या हुआ? आपातकाल के सबक, आपातकाल के बाद की राजनीति, लोकसभा के चुनाव–1977, जनता सरकार, विरासत।

CAREERS360

इकाई	विषयवस्तु	आबंटित अंक	निर्धारित कालखण्ड

इकाई 8

अध्याय 16. जन आंदोलनों का उदय 11

जन आंदोलनों की प्रकृति, चिपको आंदोलन, दल–आधारित आंदोलन, राजनीतिक दलों से स्वतंत्र आंदोलन, दलित पैंथर्स– उदय, गतिविधि, भारतीय किसान यूनियन– उदय, विशेषताएँ, ताड़ी–विरोधी आंदोलन– उदय, आंदोलन की कड़ियाँ, नर्मदा बचाओ आदोलन,– सरदार सरोवर परियोजना, वाद–विवाद और संघर्ष जन आंदोलन के सबक, सूचना के अधिकार का आंदोलन।

अध्याय 17. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ 11

क्षेत्र और राष्ट्र, भारत सरकार का नजरिया, तनाव के दायरे, जम्मू एवं कश्मीर– समस्या की जडें, द्रविड आंदोलन, बाहरी और आंतरिक विवाद, राजनीति : 1948 के बाद से, विद्रोही तेवर और उसके बाद, अलगाववाद और उसके बाद, पंजाब– राजनीतिक संदर्भ, हिंसा का चक्र, शांति की ओर, पूर्वोत्तर, स्वायत्तता की मांग, अलगाववादी आंदोलन, बाहरी लोगों के खिलाफ़ आंदोलन, समाहार और राष्ट्रीय अखंडता, सिक्किम का विलय गोवा की मुक्ति।

अध्याय 18. भारतीय राजनीति : नए बदलाव 13

1990 का दशक, गठबंधन का युग, कांग्रेस का पतन, गठबधन की राजनीति, केन्द्रीय सरकार 1989 के बाद अन्य पिछड़ा वर्ग का राजनीतिक उदय, मंडल आयोग, राजनीतिक परिणाम, सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र, अयोध्या विवाद, गुजरात के दंगे, एक नयी सहमति का उदय, 2004 के लोकसभा चुनाव, बढ़ती सहमति,

योग	80	220
प्रायोजना	20	20
महायोग	100	240

CAREERS360

परिशिष्ट – B

प्रायोजना कार्य
विषय – राजनीति विज्ञान (103)
कक्षा – XII

समय : 02 घण्टा

कुल अंक – 20

स.क्र.	विषयवस्तु	अंक	
1.	प्रायोजना रिकार्ड	04 अंक	
2.	प्रायोजना कार्य/परीक्षा		
	(i) प्रस्ताव, सहयोगिता एवं सहभागिता	02 अंक	12
	(ii) प्रस्तुतीकरण में सृजनात्मकता	02 अंक	
	(iii) विषयवस्तु, अवलोकन एवं अनुसंधान कार्य	04 अंक	
	(iv) परिस्थितियों का विश्लेषण	04 अंक	
3.	मौखिक (Viva)	04 अंक	
	योग	20 अंक	

CAREERS360

प्रायोजना कार्य
सत्र – 2023–24
कक्षा – XII
विषय – राजनीति शास्त्र (103)

समय : 02 घण्टा पूर्णांक : 20 अंक

प्रायोजना कार्य का उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों में विषय विशेष के प्रति शोधकार्य की रूचि जागृत करना।
2. विद्यार्थियों में व्यक्तिगत तार्किक क्षमता, विषयवस्तु अनुरूप ज्ञान, कौशल में दक्षता लाना।
3. सैद्धांतिक निर्माणों और तर्को का उपयोग करके वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों का विश्लेषण और मूल्यांकन क्षमता विकसित करना।
4. एक स्वतंत्र और रचनात्मक शोधकार्य, कौशल और क्षमताओं के अनुप्रयोग को प्रदर्शित करने की क्षमता का विकास।
5. राजनीति विज्ञान की विभिन्न विषयवस्तु जिसमें विद्यार्थियों की रूचि है के प्रति तार्किक क्षमता/संवाद कौशल का विकास करना।

- **प्रायोजना कार्य के महत्वपूर्ण पद**

प्रायोजना कार्य हेतु चयनित शीर्षक में निम्नानुसार पद होना चाहिए :–

1. शीर्षक/विषय का चयन करना।
2. आवश्यक सामग्री।
3. शोध सामग्री/आकड़े एकत्र करना।
4. सामग्री/ आकड़े व्यवस्थित करना।
5. प्रायोजना कार्य की प्रस्तुति/आकड़े का विश्लेषण/कार्यविधि।
6. प्रासंगिक आंकड़े, चार्ट, नक्शा व चित्र का समावेश।
7. प्रासंगिक निष्कर्ष निकालना।

- **प्रायोजना कार्य में शिक्षक की भूमिका :–**

विद्यार्थियों में चिंतन/मनन कौशल को विकसित करनें में शिक्षक की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक शिक्षक को चाहिए कि वह :–

1. प्रायोजना के माध्यम से प्राप्त किए जाने वाले सीखने के प्रतिफल को शिक्षार्थियों के साथ साझा करना।
2. विस्तृत चर्चा और प्रासंगिक विषय पर विचार–विमर्श के बाद प्रत्येक छात्र को विषय चुनने में मदद करना।

CAREERS360

3. छात्र के प्रायोजना कार्य के चयन और अवलोकन, मार्गदर्शन हेतु एक सूत्रधार की भूमिका निभाना।
4. आवश्यकतानुसार अनुसंधान कार्य का मार्गदर्शन करना।
5. प्रायोजना कार्य की प्रस्तुति के लिए विद्यार्थी को तैयार करना।
6. प्रायोजना फाइल की प्रस्तुति की व्यवस्था करना।

- प्रायोजना कार्य के लिए अपेक्षित चेकलिस्ट :–

1. विषय/शीर्षक का परिचय।
2. कारणों घटनाओं, परिणामों या उपचारों की पहचान।
3. विभिन्न हितधारक और उनमें से प्रत्येक पर प्रभाव।
4. पहचानी गई स्थितियों या विषयों के लाभ व हानि।
5. प्रायोजना के दौरान सुझाई गई रणनीतियों के अल्प व दीर्घकालिक परिणाम।
6. प्रायोजना कार्य और प्रस्तुतीकरण के लिए उपयोग किए गये आकड़ों की वैधता, विश्वसनीयता और प्रासंगिकता।
7. प्रस्तुति और लेखन जो प्रोजेक्ट फाइल में संक्षिप्त और सुसंगत है।
8. प्रोजेक्ट फाईल में अनुक्रमणिका, संसाधन अनुभाग, ग्रंथ सूची आदि में संदर्भित सामग्री का समावेश।

CAREERS360

कक्षा – XII
विषय – राजनीति शास्त्र (103)
प्रायोजना कार्य

पूर्णांक – 20 अंक

- सामान्य विवरण –

1. सम्पूर्ण शैक्षणिक सत्र में प्रायोजना कार्य हेतु किसी एक विषय/शीर्षक का चयन किया जाना है।
2. प्रोजेक्ट व्यक्तिगत या 4–5 लोगों के समूह में विषयवस्तु के अनुरूप बनाया जा सकता है।
3. प्रायोजना कार्य गतिविधि आधारित जैसे 01 रोलप्ले/भूमिका/प्रस्तुतीकरण/मॉडल/क्षेत्रीय सर्वे, मॉक ड्रिल, मॉक इवेन्ट हो।
4. शिक्षक को प्रोजेक्ट कार्य के तैयारी हेतु विद्यार्थियों को एक समय–सीमा निर्धारित कर पर्याप्त समय देना चाहिए। प्रायोजना कार्य संबंधित विद्यार्थियों की जिज्ञासा/समस्याओं पर शिक्षक द्वारा समय–समय पर चर्चा एवं मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

- प्रायोजना के अध्याय :–

1. शीतयुद्ध का दौर
2. सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र
3. समकालीन दक्षिण एशिया
4. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
5. पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन
6. एक दल के प्रभुत्व का दौर
7. भारत के विदेश संबंध
8. जन आन्दोलनों का उदय

- सुझावित प्रायोजना :–

1. शीतयुद्ध के कारणों का विश्लेषण करते हुए महाशक्तियों द्वारा बनाये गये सैन्य संगठन के नाम एवं संगठन में शामिल देशों के सूचीबद्ध कर प्रायोजना तैयार करना।
2. भारत ने आजादी के बाद गुट निरपेक्ष नीति क्यों अपनाई? किसी एक महाशक्ति के साथ रहने पर हमें किन परेशानियों से गुजरना पड़ता? सूची बनाकर प्रोजेक्ट तैयार करना।
3. यूरोपीय संघ की विशेषताओं का चार्ट बनाकर प्रायोजना तैयार करें तथा बताईये कि ऐसी क्या विशेषताएँ है जो यूरोपीय संघ को एक प्रभावी क्षेत्रीय संगठन बनाती है? यूरोपीय संघ की भविष्य में क्या भूमिका हो सकती है?
4. सार्क संगठन पर प्रायोजना तैयार करते हुए बताइए कि सार्क ने किस प्रकार की भूमिका अदा की है?
5. सुरक्षा परिषद के स्थायी एवं अस्थायी सदस्यों को सूचीबद्ध कर उनकी कार्यप्रणाली की खामियाँ बताइये तथा सुरक्षा परिषद में सुधार हेतु सुझाव दीजिए।

CAREERS360

6. "पर्यावरण प्राकृतिक प्रदूषण से वैश्विक महामारी कोविड–19 जैसी घातक बीमारियाँ फैली है।" दूषित पर्यावरण से होने वाली प्रमुख बीमारियों व रोकथाम के उपाय पर प्रायोजना।
7. भारत की विदेश नीति का एक फ्लो चार्ट बनाइए तथा वर्तमान परिवेश में आप किन दो बातों को भारतीय विदेश नीति में बदलाना चाहेगें?
8. स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् भारत में चलाए गए जनआंदोलन व उसका प्रभाव पर प्रायोजना।

टीप :– 1. उक्त सुझावित प्रायोजनाएँ उदाहरण स्वरूप है। सत्रगत कोई एक प्रायोजना का चयन कर उस पर विस्तृत प्रायोजना कार्य निर्देशानुसार कराया जाए।

2. शिक्षक विषयवस्तु/ पाठ्यक्रम आधारित आवश्यकतानुसार विषय चयन कर विद्यार्थियों को दे सकता है। किन्तु यह ध्यान रखा जाये कि वह किसी भी धर्म/जाति/व्यक्तिगत भावनाओं को ठेस न पहुँचाता हो।

——00——

CAREERS360